UG/SEM-3/ 2018-21/ HINDI HONS/ CORE -6/ BY – DR.SANDHYA SINHA

प्रार्थना कविता का भावार्थ

प्रार्थना कविता हिंदी साहित्य के मूर्धन्य कवि श्री सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी द्वारा लिखित हिंदी की प्रतिनिधि कविताओं में से एक है। कवि प्रार्थना कविता में ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उन्हें ईश्वर से कोई दैवी शक्ति की अपेक्षा नहीं है। कवि कहते हैं कि उन्हें कोई ऐसी शक्ति की आवश्यकता नहीं है जिससे वह अपने पुरुषार्थ से चूक जाएं । कवि ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु मैं तुमसे कोई अतिरिक्त शक्ति नहीं मांगना चाहता, बल्कि मैं चाहता हूं कि मैं स्वयं ऐसी शक्ति अर्जित करूं जिससे मैं अपनी समस्याओं का और समाज की समस्याओं का समाधान कर सकूं। कवि कहते हैं कि भले ही इस संघर्ष में मुझे मरना पड़े, टूटना पड़े और बिखरना पड़े फिर भी मैं उसके लिए तैयार हूं। कवि कहते हैं कि मैं अपनी अर्जित शक्ति से उस ऊंचे पर्वत को गिरने से रोकने के लिए मैं संघर्ष करूंगा। कवि कहते हैं कि मैं पर्वतों जैसे ऊंचे ओहदे वाले से, ऊँची पद प्रतिष्ठा और सत्ता वाले लोगों से अपनी अस्मिता के लिए अपने वर्चस्व के लिए, यानी उस सर्वहारा वर्ग के लिए संघर्ष करूंगा, लेकिन उनकी शरण स्वीकार नहीं करूंगा । कवि यह भी कहते हैं कि किसी की जी हुजूरी करने से बेहतर है कि अपने हक के लिए उससे संघर्ष किया जाए और इस संघर्ष के लिए जिस शक्ति की आवश्यकता होगी वह मैं खुद अर्जित करूंगा। कभी ईश्वर से कहते हैं कि क्या कभी गंध हीन फूलों ने तुमसे गंध मांगा है या फिर कोई कोमलता से हीन कांटे ने तुमसे कोमलता की अपेक्षा की है??? भले ही इस तरह कवि यह कहना चाहते हैं कि भले ही समाज का कोई वर्ग या तबका उपेक्षित रह गया हो, गंधहीन और कोमलता से हीन रह गया हो, सूखा और जलहीन रह गया हो, लेकिन वह कभी भी सर्वशक्तिमान के समक्ष जाकर गंध और नमी के लिए प्रार्थना नहीं करता क्योंकि जो उसे प्राकृतिक रूप से प्राप्त है वही उसका प्राप्य है ।

वह उसे ही समेट कर और उससे ही अपनी चेतना शक्ति प्रज्वलित कर संघर्ष करने को तैयार हैं।

वह ईश्वर को उलाहना देते हुए यह भी कहते हैं कि यदि आपने इस प्रकार का समाज और असमान सामाजिक व्यवस्था बनाई है, और आप चैन से सो भी रहे हैं तो आप निरर्थक निद्रा में सोए रहिए लेकिन मैं तो जागूंगा क्योंकि मैं कलम का सिपाही हूं और वक्त का पहरेदार हूं। मुझे जागना होगा और इस समाज को रास्ता दिखाना होगा। इन सबके लिए मैं आपसे कुछ मांगूंगा नहीं।

कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविता 'प्रार्थना' कविता आत्मविश्वास और साहस से भरी हुई कविता है। मनुष्यता में आस्था की कविता है। अक्षरों में विश्वास की कविता है। संघर्ष में जिजीविषा की कविता है और हर अंधकार पर विजय प्राप्त करने की कविता है। कविता का मूल प्रतिपाद्य यही है कि मनुष्य के अंदर स्वयं सारी शक्तियां होती हैं। मनुष्य को अपनी ही शक्तियों को जागृत कर न्याय के लिए, वर्चस्व के लिए, अधिकार और सम्मान के लिए, समाज और मानवता के लिए संघर्ष करना चाहिए। सत्ता की जी हुजूरी और प्रभुता की शरण से बेहतर है मानवता के लिए संघर्ष करना।।

डॉ संध्या सिन्हा

ReplyForward